नहीं है। सम्पदा शुल्क अधिनियम 15 अक्तूबर, 1953 से और धन-कर अधिनियम 1 अप्रैल, 1957 से लागू हुआ। 15-10-1953 तथा 1-4-1957 के बाद से जिन व्यक्तियों से सम्पदा शुल्क तथा धन-कर वसूल किया गया उनके नामों तथा प्रत्येक से अलग अलग वसूल की गयी रकम के बारे में सूचना सारे देश में सम्पदा शुल्क के सहायक नियंत्रकों तथा धन-कर अधिकारियों से इकट्ठी करनी पड़ेगी और ऐसा करने में बहुत सा समय तथा श्रम लगेगा। तथापि, इन अधिनियमों के लागू होने के बाद से प्रतिवर्ष पूरे किये गये कर-निर्धारणों की संख्या, कर और शुल्क सम्बन्धी जारी की गयी मांगों तथा वसूल रकम और वर्ष के अन्त में बकाया रकम के बारे में सूचना विवरण-पत्र में दी गयी है जो सभा पटल पर रखी गयी है। [पुस्तकालय में रखी गयी। देखिये संख्या LT —1933/67]

(ग) बकाया मांग की वसूली के लिए कानून में की गयी व्यवस्था के अनुसार तथा प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न उपाय किये जा रहे हैं।

अनाज का उत्पादन बढ़ाने के लिये बनारस और एटा जिलों को विश्व बैंक द्वारा ऋण

5601. **श्री सरजू पाण्डेय :**
श्री राम कृष्ण गुप्त :

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या विश्व बैंक ने उत्तर प्रदेश के बनारस और एटा जिलों में सिंचाई सुविधायें और खाद्य उत्पादन बढ़ाने के लिये कोई ऋण दिया है; और

(ख) यदि हां, तो कुल कितना ऋण दिया गया है तथा इस ऋण का केवल इन दोनों जिलों में ही प्रयोग किये जाने का क्या कारण है ?

उप-प्रधान मंत्री और वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) जी नहीं। अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ, जो विश्व बैंक से सम्बद्ध है, आजकल एक प्रस्ताव पर विचार कर रहा है।

(ख) ऋण की रकम के बारे में अभी तक कोई फैसला नहीं हुआ। इस योजना के लिए इन दो जिलों का चुनाव तकनीकी और आर्थिक कारणों से, अर्थात् इस आधार पर किया गया है कि इन जिलों में विविध प्रकार की ऐसी समस्याएं हैं जिन्हें हल करने से प्राप्त होने वाला अनुभव उत्तर प्रदेश के बाकी हिस्से में कृषि के विकास के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। इन समस्याओं का सम्बन्ध राज्य के और गैर-सरकारी क्षेत्र में नलकूपों के विकास और संचालन, विभिन्न प्रकार की चट्टानी जमीनों में छेद करने, विभिन्न प्रकार के ऋण-संगठनों, जैसे सहकारी, सरकारी और वाणिज्यिक बैंकों के आपसी सम्बन्धों, जमीन की किस्मों और खारेपन आदि से है।

मूल्य सूचकांक

5602. **श्री ब्रह्मानन्द जी :**
श्री हुकम चन्द कछवाय :

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) फरवरी, 1967 से जून, 1967 की अवधि में मूल्य सूचकांक प्रतिमास क्या रहा है और गत 12 महीनों का औसत सूचकांक क्या है;

(ख) क्या सरकार का विचार आकाशवाणी के मूल्य सूचकांक को प्रसारित करने का है; और

(ग) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं ?